Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 3, May-June 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i03. 1354

रमेश उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध विमर्श: विश्लेषणात्मक अध्ययन

ओमप्रकाश शर्मा[1], डॉ. अनिल अग्रवाल[2]

[1]शोधार्थी, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा
[2]सहायक आचार्य- हिंदी, राजकीय महाविद्यालय, हिण्डौन सिटी, जिला करौली (राजस्थान)

सारांश

प्रस्तुत शोध–लेख *"रमेश उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध विमर्श: विश्लेषणात्मक अध्ययन"* में रमेश उपाध्याय के कथा–साहित्य में वृद्धावस्था की प्रस्तुति का गहन विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन वृद्ध विमर्श के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य में यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि उनकी कहानियों में वृद्धावस्था को केवल जैविक क्षरण या शारीरिक दुर्बलता के रूप में नहीं, बल्कि एक जटिल सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक अवस्था के रूप में चित्रित किया गया है। रमेश उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध पात्र आधुनिक समाज में उपेक्षा, अकेलेपन और संवादहीनता का सामना करते हुए दिखाई देते हैं। पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था के विघटन और उपभोक्तावादी मानसिकता के विस्तार के साथ वृद्ध व्यक्ति किस प्रकार परिवार और समाज में हाशिए पर पहुँच जाता है—यह यथार्थ उनकी कथाओं में सशक्त रूप से उभरता है। आर्थिक निर्भरता, निर्णय–प्रक्रिया से बहिष्कार और अनुभवों की अवहेलना वृद्ध पात्रों के आत्मसम्मान को गहराई से प्रभावित करती है। इसके साथ ही, उपाध्याय की कहानियाँ वृद्धावस्था को केवल करुणा का विषय न बनाकर एक सामाजिक प्रश्न के रूप में प्रस्तुत करती हैं, जहाँ वृद्ध व्यक्ति की स्मृतियाँ, जीवन–अनुभव और मौन पीड़ा समकालीन समाज की संवेदनहीनता पर प्रश्नचिह्न लगाती हैं। इस प्रकार, यह शोध निष्कर्ष रूप में प्रतिपादित करता है कि रमेश उपाध्याय का कथा–साहित्य वृद्ध विमर्श को मानवीय गरिमा, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक चेतना से जोड़ते हुए हिंदी कहानी को एक महत्वपूर्ण वैचारिक विस्तार प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: रमेश उपाध्याय, वृद्ध विमर्श, वृद्धावस्था, हिंदी कहानी, सामाजिक उपेक्षा, पारिवारिक विघटन, अकेलापन

1.1 भूमिका

वृद्धावस्था समकालीन समाज का एक ऐसा जीवन-चरण है जो आज केवल जैविक या शारीरिक परिवर्तन तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि गहरे सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अंतर्विरोधों से जुड़ गया है। बढ़ती आयु-प्रत्याशा, परिवार व्यवस्था में संरचनात्मक बदलाव और उपभोक्तावादी मूल्यों के वर्चस्व ने वृद्ध व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। आधुनिक समाज में वृद्ध व्यक्ति को प्रायः अनुत्पादक, आश्रित और बोझ के रूप में देखा जाने लगा है, जिसके परिणामस्वरूप वह सामाजिक हाशिए की स्थिति में पहुँच जाता है। इसी संदर्भ में वृद्ध विमर्श का उदय हुआ है, जो वृद्धावस्था को करुणा या दया के भाव से देखने के बजाय अस्मिता, गरिमा और अधिकार

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 3, May-June 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i03. 1354

के प्रश्न के रूप में स्थापित करता है। साहित्य, विशेषतः कथा-साहित्य, सामाजिक यथार्थ की सूक्ष्म परतों को उजागर करने का माध्यम रहा है; अतः वृद्ध विमर्श की साहित्यिक प्रासंगिकता इस तथ्य में निहित है कि वह समाज की संवेदनहीनता, संबंधों के विघटन और मानवीय मूल्यों के क्षरण को कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त करता है। वृद्ध विमर्श की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि वृद्धावस्था केवल जीवन का अंतिम पड़ाव नहीं, बल्कि अनुभव, स्मृति और आत्मचेतना से युक्त एक सक्रिय अवस्था भी हो सकती है। जेरॉन्टोलॉजी और सामाजिक अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि आधुनिक पूँजीवादी समाज में वृद्ध व्यक्ति की उपयोगिता को आर्थिक उत्पादकता से जोड़ा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा निरंतर घटती जाती है (सिंह 2006)। भारतीय सामाजिक संरचना में यह संकट और अधिक जटिल हो जाता है, क्योंकि परंपरागत रूप से वृद्धों को सम्मान और संरक्षण का पात्र माना गया, किंतु समकालीन सामाजिक परिवर्तनों ने इस मूल्य-व्यवस्था को कमजोर कर दिया है। साहित्य इस परिवर्तनशील यथार्थ को न केवल प्रतिबिंबित करता है, बल्कि उसके अंतर्विरोधों पर प्रश्न भी उठाता है; इसी कारण वृद्ध विमर्श साहित्यिक अध्ययन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनकर उभरा है।

हिंदी कहानी में वृद्ध पात्रों की परंपरा आरंभ से विद्यमान रही है, किंतु उनके चित्रण की दृष्टि समय के साथ बदलती रही है। प्रारंभिक हिंदी कथा-साहित्य में वृद्ध पात्र नैतिक आदर्शों के वाहक, अनुभव-संपन्न मार्गदर्शक या त्यागमूर्ति के रूप में प्रस्तुत किए गए। प्रेमचंद के कथा-साहित्य में वृद्ध पात्र सामाजिक यथार्थ का हिस्सा होते हुए भी प्रायः करुणा और नैतिकता के आलोक में चित्रित होते हैं (त्रिवेदी, 2010)। स्वतंत्रता के बाद, विशेषतः नई कहानी आंदोलन के साथ, वृद्ध पात्रों की प्रस्तुति अधिक यथार्थवादी और आलोचनात्मक होती गई। इस दौर में वृद्धावस्था को सामाजिक उपेक्षा, पारिवारिक विघटन और पीढ़ीगत संघर्ष के संदर्भ में देखा जाने लगा। समकालीन हिंदी कहानी में यह विमर्श और अधिक सघन हो जाता है, जहाँ वृद्ध पात्र न केवल पीड़ा के प्रतीक हैं, बल्कि सामाजिक संरचना की विफलताओं को उजागर करने वाले सशक्त कथात्मक माध्यम भी बनते हैं। इसी समकालीन परंपरा में रमेश उपाध्याय का कथा-साहित्य विशेष महत्व रखता है। उनका कथा-जगत सामाजिक यथार्थ की उन परतों को उजागर करता है, जहाँ वृद्ध व्यक्ति पारिवारिक स्वार्थ, आर्थिक निर्भरता और भावनात्मक उपेक्षा के बीच संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है। उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध पात्र किसी एक सामाजिक वर्ग तक सीमित नहीं हैं; वे विविध सामाजिक पृष्ठभूमियों से आते हुए भी समान रूप से उपेक्षा और अकेलेपन का अनुभव करते हैं। उनकी कथाओं में वृद्धावस्था को व्यक्तिगत दुर्भाग्य के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना की असफलता के परिणामस्वरूप प्रस्तुत किया गया है। यह चित्रण उस सामाजिक यथार्थ से गहराई से जुड़ा हुआ है, जहाँ भारत में वृद्ध जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है, जबकि उनके लिए सामाजिक सुरक्षा और पारिवारिक सहारा लगातार कमजोर पड़ता जा रहा है (भारत सरकार, 2016)। इस प्रकार रमेश उपाध्याय की कहानियाँ वृद्ध विमर्श को सामाजिक आलोचना के व्यापक फलक पर स्थापित करती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य रमेश उपाध्याय की चयनित कहानियों के माध्यम से वृद्ध विमर्श के विविध आयामों का विश्लेषण करना है, जिसमें उपेक्षा, आर्थिक शोषण, मानसिक पीड़ा, बदलते पारिवारिक संबंध और जीवन के प्रति दृष्टिकोण जैसे पक्ष प्रमुख हैं। यह शोध इस प्रश्न की पड़ताल करता है कि उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध पात्रों की सामाजिक स्थिति किस प्रकार निर्मित होती है और पारिवारिक तथा सामाजिक संरचनाएँ उनके जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं। साथ ही यह भी जाँचा गया है कि क्या इन कहानियों में वृद्धावस्था को केवल पीड़ा और निराशा के

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 3, May-June 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i03. 1354

रूप में प्रस्तुत किया गया है या उसमें जीवनबोध और प्रतिरोध की संभावनाएँ भी निहित हैं। अध्ययन की कार्य-विधि गुणात्मक पाठ-विश्लेषण पर आधारित है, जिसमें चयनित कहानियों का विषयवस्तु-आधारित और विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। वृद्ध अध्ययन और सामाजिक आलोचना के सिद्धांतों के आलोक में कथा-पाठ और सामाजिक यथार्थ के अंतर्संबंधों को समझने का प्रयास करते हुए यह शोध हिंदी कहानी में वृद्ध विमर्श को एक व्यवस्थित, डेटा-संवेदी और अकादमिक दृष्टि प्रदान करता है।

1.2 सैद्धांतिक ढाँचा एवं शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन का सैद्धांतिक ढाँचा वृद्ध अध्ययन, सामाजिक-आर्थिक आलोचना तथा साहित्यिक पाठ-विश्लेषण के अंतर्विषयी समन्वय पर आधारित है। वृद्ध विमर्श को समझने के लिए केवल साहित्यिक सौंदर्यशास्त्र पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान से जुड़े सिद्धांतों का सहारा लेना आवश्यक हो जाता है। इसी दृष्टि से यह शोध वृद्धावस्था को एक सामाजिक निर्मिति के रूप में देखता है, जो समय, समाज और सत्ता-संरचनाओं के साथ निरंतर बदलती रहती है (बार्स एवं फिलिप्सन, 2014)। रमेश उपाध्याय की कहानियाँ इसी परिवर्तित सामाजिक संदर्भ में वृद्ध जीवन के अनुभवों को अभिव्यक्त करती हैं, अतः उनके अध्ययन के लिए एक बहुस्तरीय सैद्धांतिक दृष्टि अपनाई गई है।

वृद्ध अध्ययन या जेरॉन्टोलॉजी मूलतः वृद्धावस्था के जैविक, मानसिक और सामाजिक पक्षों का अध्ययन है, किंतु हाल के दशकों में इसका विस्तार सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्रों तक हुआ है। साहित्यिक जेरॉन्टोलॉजी इस बात पर बल देती है कि साहित्य वृद्धावस्था के अनुभवों को मात्र चिकित्सा या जनसांख्यिकीय आँकड़ों से अलग, मानवीय संवेदना और जीवनानुभव के रूप में प्रस्तुत करता है (सिंह, 1999)। वृद्ध विमर्श का यह दृष्टिकोण इस शोध के लिए विशेष रूप से उपयोगी है, क्योंकि रमेश उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध पात्र आँकड़ों या अमूर्त अवधारणाओं के रूप में नहीं, बल्कि जीवित, संवेदनशील और संघर्षशील मनुष्यों के रूप में उपस्थित हैं। उनकी कथाएँ यह दर्शाती हैं कि वृद्धावस्था अनुभव, स्मृति और आत्मसम्मान से युक्त एक सक्रिय अवस्था भी हो सकती है, जिसे समाज प्रायः अनदेखा कर देता है।

सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण से वृद्ध विमर्श यह स्पष्ट करता है कि वृद्ध व्यक्ति की स्थिति केवल आयु से निर्धारित नहीं होती, बल्कि उसकी आर्थिक भूमिका, संपत्ति, श्रम-क्षमता और पारिवारिक निर्भरता से गहराई से जुड़ी होती है। आधुनिक पूँजीवादी समाज में उत्पादकता को मानवीय मूल्य का मापक बना दिया गया है, जिसके परिणामस्वरूप वृद्ध व्यक्ति, जिसे 'अनुत्पादक' माना जाता है, सामाजिक हाशिए पर धकेल दिया जाता है (गुलेट, 2004)। भारतीय समाज में यह समस्या पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था के विघटन के साथ और अधिक तीव्र हो जाती है। रमेश उपाध्याय की कहानियों में संपत्ति विवाद, आर्थिक शोषण और निर्भरता के माध्यम से यह सामाजिक-आर्थिक यथार्थ स्पष्ट रूप से उभरता है, जहाँ रिश्ते भावनाओं से अधिक स्वार्थ और लाभ-हानि की गणनाओं से संचालित होते दिखाई देते हैं। इस दृष्टि से उनका कथा-साहित्य वृद्ध विमर्श को सामाजिक असमानता और नैतिक पतन की व्यापक संरचना से जोड़ता है।

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 3, May-June 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i03. 1354

शोध-पद्धति की दृष्टि से यह अध्ययन गुणात्मक और विश्लेषणात्मक है, जिसमें पाठ-विश्लेषणात्मक तथा विषयवस्तु-आधारित (thematic) अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। चयनित कहानियों के पाठ को सूक्ष्म रूप से पढ़ते हुए वृद्ध पात्रों से जुड़े प्रमुख विषयों—जैसे उपेक्षा, अकेलापन, आर्थिक शोषण, मानसिक पीड़ा और जीवनबोध—की पहचान की गई है। इसके पश्चात इन विषयों का विश्लेषण सामाजिक और सैद्धांतिक संदर्भों में किया गया है, ताकि कथा-पाठ और यथार्थ के बीच अंतर्संबंधों को स्पष्ट किया जा सके (ब्राउन, 2011)। यह पद्धति शोध को वर्णनात्मक होने से आगे ले जाकर व्याख्यात्मक और आलोचनात्मक स्तर प्रदान करती है।

इस अध्ययन में रमेश उपाध्याय की कुछ विशिष्ट कहानियों का चयन उनके वृद्ध विमर्श की प्रतिनिधिक प्रकृति के आधार पर किया गया है। 'बाबू जसवंत सिंह', 'अर्थतंत्र', 'खून का रिश्ता', 'समय सरगम', 'उधड़ा हुआ स्वेटर' और 'आखिरवीं विदा' जैसी कहानियाँ वृद्धावस्था के विविध अनुभवों—उपेक्षा, आर्थिक संघर्ष, मानसिक पीड़ा और सकारात्मक जीवन-दृष्टि—को समग्रता में प्रस्तुत करती हैं। इन कहानियों का चयन इस औचित्य पर आधारित है कि वे न केवल वृद्ध जीवन की समस्याओं को उजागर करती हैं, बल्कि समकालीन सामाजिक संरचना की आलोचना भी करती हैं। इस प्रकार चयनित कथाएँ शोध के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए पर्याप्त और प्रासंगिक पाठीय सामग्री प्रदान करती हैं तथा रमेश उपाध्याय के कथा-साहित्य में वृद्ध विमर्श की बहुआयामी प्रकृति को समझने में सहायक सिद्ध होती हैं।

1.3 रमेश उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध विमर्श के प्रमुख आयाम

1.3.1 उपेक्षा और अकेलापन: वृद्ध अस्तित्व की त्रासदी

रमेश उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध विमर्श का सबसे मार्मिक और केंद्रीय पक्ष उपेक्षा और अकेलापन है, जो वृद्ध व्यक्ति के अस्तित्व को भीतर से तोड़ देता है। आधुनिक परिवार व्यवस्था में जहाँ संबंधों का आधार भावनात्मक जुड़ाव के स्थान पर उपयोगिता और सुविधा बनता जा रहा है, वहाँ वृद्ध व्यक्ति धीरे-धीरे पारिवारिक संरचना के केंद्र से बाहर खिसकता चला जाता है। उपाध्याय की कहानियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि वृद्धावस्था में उपेक्षा केवल बाहरी व्यवहार तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह आत्मसम्मान, पहचान और जीवन-मूल्य को भी गहरे स्तर पर प्रभावित करती है। वृद्ध व्यक्ति बच्चों के बीच रहते हुए भी मानसिक रूप से अकेला हो जाता है और उसे यह बोध होने लगता है कि उसकी उपस्थिति अब आवश्यक नहीं रही है (सिंह, 2004)।

परिवार के भीतर बच्चों द्वारा अवहेलना रमेश उपाध्याय की कहानियों में बार-बार उभरने वाला यथार्थ है। 'बाबू जसवंत सिंह' कहानी का वृद्ध पात्र अपने ही घर में एक ऐसे व्यक्ति के रूप में उपस्थित है, जिसकी राय, अनुभव और भावनाएँ किसी के लिए महत्त्वपूर्ण नहीं रह गई हैं। कहानी में यह स्थिति अत्यंत सूक्ष्म ढंग से व्यक्त होती है, जब बाबू जसवंत सिंह अपने ही घर में निर्णयों से बाहर कर दिए जाते हैं और उनके बोलने को अनावश्यक हस्तक्षेप माना जाता है। बच्चों का व्यवहार यह संकेत देता है कि वृद्ध पिता अब केवल एक दायित्व हैं, संबंध नहीं। यह पारिवारिक अवहेलना वृद्ध व्यक्ति को सामाजिक ही नहीं, आत्मिक स्तर पर भी अलग-थलग कर देती है और उसे अपने ही घर में "अतिथि" जैसा अनुभव होने लगता है (त्रिवेदी, 2010)।

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 3, May-June 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i03. 1354

इस अवहेलना के साथ-साथ आत्मीय संबंधों में उत्पन्न परायापन उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध जीवन की एक गहरी त्रासदी के रूप में उभरता है। 'शशिप्रभा शास्त्री की "अर्थ"' कहानी में वृद्ध स्त्री पात्र का जीवन भावनात्मक शून्यता से घिरा हुआ दिखाई देता है। परिवार के सदस्य उसके आसपास उपस्थित तो हैं, किंतु उनके व्यवहार में संवेदना और संवाद का अभाव है। कहानी में 'अर्थ' शब्द केवल आर्थिक मूल्य का संकेत नहीं देता, बल्कि वह उन संबंधों की निरर्थकता की ओर भी संकेत करता है, जहाँ वृद्ध व्यक्ति की भावनाओं का कोई मूल्य नहीं रह जाता। यहाँ वृद्धावस्था में स्त्री का परायापन और अधिक तीखा रूप ले लेता है, क्योंकि वह न केवल उम्र के कारण, बल्कि लिंग के कारण भी उपेक्षा का शिकार होती है (बार्स एवं फिलिप्सन, 2014)।

उपेक्षा और परायापन का प्रतिफल वृद्ध व्यक्ति के भीतर एक गहरे एकाकीपन और "अनुपयोगी" होने की भावना के रूप में सामने आता है। रमेश उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध पात्र बार-बार यह अनुभव करते हैं कि उनका जीवन अब किसी काम का नहीं रहा। 'बाबू जसवंत सिंह' में यह भावना तब और तीव्र हो जाती है, जब वृद्ध पात्र स्वयं अपने अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगाने लगता है और यह सोचने को विवश हो जाता है कि उसका अनुभव और जीवन-संघर्ष अब किसी के लिए अर्थपूर्ण नहीं हैं। यह मानसिक स्थिति केवल व्यक्तिगत पीड़ा नहीं, बल्कि उस सामाजिक दृष्टिकोण की उपज है, जो मानव-मूल्य को उत्पादकता से जोड़कर देखता है (वुडवर्ड, 1999)।

इन कहानियों का पाठ-विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि रमेश उपाध्याय वृद्धावस्था को दया या सहानुभूति का विषय बनाकर प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि उसे सामाजिक विफलता के रूप में रेखांकित करते हैं। 'बाबू जसवंत सिंह' में सामाजिक अलगाव और आत्मगौरव के क्षरण के माध्यम से यह दिखाया गया है कि उपेक्षा किस प्रकार वृद्ध व्यक्ति की आंतरिक दुनिया को तोड़ देती है, जबकि 'शशिप्रभा शास्त्री की "अर्थ"' में भावनात्मक शून्यता और संवादहीनता वृद्ध जीवन को एक मूक पीड़ा में बदल देती है। इस प्रकार उपाध्याय की कहानियाँ उपेक्षा और अकेलेपन को वृद्ध अस्तित्व की व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि समकालीन समाज की नैतिक और संवेदनात्मक विफलता के रूप में स्थापित करती हैं, जो वृद्ध विमर्श को एक सशक्त सामाजिक आलोचना में रूपांतरित कर देती हैं।

1.3.2 आर्थिक शोषण और निर्भरता का संकट

रमेश उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध विमर्श का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और यथार्थपरक आयाम आर्थिक शोषण और निर्भरता का संकट है, जो वृद्ध व्यक्ति के पारिवारिक और सामाजिक अस्तित्व को गहरे स्तर पर प्रभावित करता है। आधुनिक समाज में जहाँ आर्थिक संसाधन संबंधों की दिशा और स्वरूप को निर्धारित करने लगे हैं, वहाँ वृद्ध व्यक्ति की स्थिति उसकी संपत्ति, पेंशन या आर्थिक उपयोगिता से जुड़कर आँकी जाती है। उपाध्याय की कहानियाँ इस कटु यथार्थ को उजागर करती हैं कि जैसे ही वृद्ध व्यक्ति की आर्थिक भूमिका कमजोर होती है, वैसे ही पारिवारिक संबंधों में उसकी स्थिति भी हाशिए पर चली जाती है। वृद्ध विमर्श के सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण के अनुसार यह स्थिति पूँजीवादी मूल्य-व्यवस्था की उपज है, जहाँ मनुष्य का मूल्य उसकी आर्थिक उत्पादकता से निर्धारित होने लगता है (गुलेट, 2004)।

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 3, May-June 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i03. 1354

रमेश उपाध्याय की कहानियों में संपत्ति को केंद्र में रखकर रिश्तों के पुनर्गठन की प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। 'अर्थतंत्र' कहानी में पारिवारिक संबंधों की संरचना पूरी तरह आर्थिक हितों के इर्द-गिर्द घूमती हुई प्रतीत होती है। यहाँ वृद्ध पात्र का महत्व उसके व्यक्तित्व, अनुभव या भावनाओं के कारण नहीं, बल्कि उसकी संपत्ति और आर्थिक संसाधनों के कारण निर्धारित होता है। कहानी में यह स्थिति संकेतात्मक रूप से व्यक्त होती है कि जैसे ही संपत्ति हस्तांतरण का प्रश्न सामने आता है, रिश्तों में अचानक आत्मीयता का प्रदर्शन होने लगता है, जबकि वास्तविक संवेदना का सर्वथा अभाव रहता है। इस प्रकार 'अर्थतंत्र' में अर्थ केवल मुद्रा का संकेत नहीं, बल्कि संबंधों की वास्तविक प्रकृति का उद्घाटन करता है, जहाँ मानवीय संबंध बाजार-तंत्र के नियमों से संचालित होते हैं (बार्स एवं फिलिप्सन, 2014)।
आर्थिक शोषण का यह रूप कई बार बुजुर्गों पर संपत्ति हस्तांतरण के लिए मानसिक और शारीरिक दबाव के रूप में सामने आता है। 'खून का रिश्ता' कहानी में यह दबाव अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है, जहाँ रक्त-संबंध का दावा करने वाले ही वृद्ध पात्र को उसके अधिकारों से वंचित करने का प्रयास करते हैं। कहानी यह स्पष्ट करती है कि परिवार के सदस्य रिश्तों की पवित्रता का सहारा लेकर वृद्ध व्यक्ति को भावनात्मक रूप से विवश करते हैं, ताकि वह अपनी संपत्ति उनके नाम कर दे। यहाँ 'खून का रिश्ता' एक विडंबनापूर्ण अर्थ ग्रहण कर लेता है, क्योंकि रक्त-संबंध मानवीय संवेदना का प्रतीक न रहकर स्वार्थ और अधिकार-हड़पने का माध्यम बन जाता है। यह स्थिति वृद्ध व्यक्ति को भीतर से तोड़ देती है और उसके जीवन की गरिमा को गहरे स्तर पर आहत करती है (वुडवर्ड, 1999)।
आर्थिक निर्भरता से उपजता असुरक्षा-बोध रमेश उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध मनःस्थिति का एक स्थायी भाव बनकर उभरता है। वृद्ध पात्र यह भली-भाँति समझता है कि उसकी सुरक्षा और सम्मान अब उसके अपने हाथ में नहीं रह गए हैं। 'अर्थतंत्र' और 'खून का रिश्ता' दोनों कहानियों में यह असुरक्षा इस रूप में सामने आती है कि वृद्ध व्यक्ति हर क्षण यह भय अनुभव करता है कि कहीं उसकी संपत्ति छिन न जाए या उसे घर से बाहर न कर दिया जाए। यह भय केवल व्यक्तिगत आशंका नहीं है, बल्कि उस सामाजिक यथार्थ की उपज है, जहाँ वृद्ध व्यक्ति के लिए कोई सुदृढ़ सामाजिक-सुरक्षा तंत्र उपलब्ध नहीं है (भारत सरकार, 2016)। आर्थिक निर्भरता उसे चुप रहने, समझौता करने और अपमान सहने के लिए विवश कर देती है।

इन कहानियों का पाठ-विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि रमेश उपाध्याय आर्थिक शोषण को केवल पारिवारिक समस्या के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक संकट के रूप में प्रस्तुत करते हैं। 'अर्थतंत्र' में अर्थ और रिश्तों के टकराव के माध्यम से यह दिखाया गया है कि जब अर्थ संबंधों पर हावी हो जाता है, तो मानवता का क्षरण अनिवार्य हो जाता है, जबकि 'खून का रिश्ता' में रक्त-संबंध और स्वार्थ के द्वंद्व के द्वारा यह उजागर किया गया है कि पारिवारिक संरचना किस प्रकार वृद्ध व्यक्ति के लिए ही सबसे असुरक्षित स्थान बन जाती है। इस प्रकार रमेश उपाध्याय की कहानियाँ वृद्ध विमर्श को आर्थिक अन्याय, नैतिक पतन और सामाजिक संवेदनहीनता के प्रश्न से जोड़ते हुए एक सशक्त आलोचनात्मक दृष्टि प्रस्तुत करती हैं।

1.3.3 बदलते पारिवारिक संबंध और पीढ़ियों का अंतराल

रमेश उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध विमर्श का एक महत्वपूर्ण आयाम बदलते पारिवारिक संबंधों और पीढ़ियों के बीच बढ़ते अंतराल के रूप में उभरता है। पारंपरिक भारतीय समाज में संयुक्त परिवार को सुरक्षा, सहयोग और भावनात्मक संबल का केंद्र माना जाता रहा है, विशेषतः वृद्धों के लिए यह संरचना सम्मान और संरक्षण का आश्वासन

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 3, May-June 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i03. 1354

देती थी। किंतु आधुनिक सामाजिक परिवर्तनों, शहरीकरण, औद्योगीकरण और व्यक्तिवादी जीवन-दृष्टि ने इस पारंपरिक व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया है। उपाध्याय की कहानियाँ इस विघटनशील पारिवारिक संरचना को वृद्ध दृष्टिकोण से देखती हैं, जहाँ परिवार का टूटना केवल भौतिक बिखराव नहीं, बल्कि संबंधों और मूल्यों के क्षरण का प्रतीक बन जाता है (बार्स एवं फिलिप्सन, 2014)।

पारंपरिक संयुक्त परिवार का विघटन रमेश उपाध्याय की कथाओं में वृद्ध जीवन की असुरक्षा का प्रमुख कारण बनकर सामने आता है। 'समय सरगम' कहानी में परिवार एक इकाई के रूप में उपस्थित तो है, किंतु उसके भीतर संबंधों की सहजता और आत्मीयता का अभाव स्पष्ट दिखाई देता है। यहाँ परिवार के सदस्य साथ रहते हुए भी मानसिक और भावनात्मक रूप से अलग-थलग हैं। वृद्ध पात्र के लिए यह स्थिति विशेष रूप से पीड़ादायक है, क्योंकि वह अपने जीवन के अधिकांश वर्ष परिवार को जोड़ने और बनाए रखने में लगा चुका होता है। जब वही परिवार भावनात्मक सहारे के स्थान पर औपचारिक सह-अस्तित्व में बदल जाता है, तो वृद्ध व्यक्ति के भीतर गहरी रिक्तता उत्पन्न हो जाती है। यह विघटन सामाजिक परिवर्तन की उस प्रक्रिया की ओर संकेत करता है, जहाँ संबंधों का आधार साझा जीवन-मूल्य नहीं, बल्कि सुविधा और आवश्यकता बनते जा रहे हैं (गुलेट, 2004)।

इस विघटन के साथ ही स्वार्थ-प्रधान संबंध और संवादहीनता उपाध्याय की कहानियों में बार-बार उभरते हैं। 'खून का रिश्ता' में पारिवारिक संवाद का अभाव और स्वार्थ की प्रधानता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। परिवार के सदस्य आपस में बात तो करते हैं, किंतु वह संवाद संवेदना और समझ पर आधारित नहीं, बल्कि अपने-अपने हितों को साधने का माध्यम मात्र रह जाता है। वृद्ध पात्र की भावनाएँ, आशंकाएँ और अपेक्षाएँ इस संवादहीनता में दबकर रह जाती हैं। यह स्थिति वृद्ध व्यक्ति को केवल अकेला ही नहीं बनाती, बल्कि उसे अपने ही परिवार में अप्रासंगिक और अनसुना महसूस करने पर विवश कर देती है। संवाद का यह अभाव पीढ़ियों के बीच की दूरी को और गहरा करता है, जिससे संबंधों में कटुता और अविश्वास जन्म लेता है (वुडवर्ड, 1999)।

नई पीढ़ी की व्यावहारिकता और वृद्धों की भावनात्मक अपेक्षाओं के बीच का द्वंद्व रमेश उपाध्याय की कहानियों में अत्यंत संवेदनशील रूप में अभिव्यक्त हुआ है। 'समय सरगम' में यह द्वंद्व स्पष्ट दिखाई देता है, जहाँ युवा पीढ़ी जीवन को योजनाओं, समय-सारिणी और व्यावहारिक निर्णयों के माध्यम से देखती है, जबकि वृद्ध पात्र संबंधों में समय, संवाद और भावनात्मक जुड़ाव की अपेक्षा करता है। यह टकराव किसी व्यक्तिगत असहमति का परिणाम नहीं, बल्कि दो भिन्न जीवन-दृष्टियों का संघर्ष है। नई पीढ़ी के लिए समय एक संसाधन है, जिसे दक्षता से उपयोग करना आवश्यक है, जबकि वृद्ध व्यक्ति के लिए समय स्मृति, संबंध और साझा अनुभव का वाहक होता है। इस भिन्नता के कारण दोनों पीढ़ियों के बीच समझ और सह-अस्तित्व कठिन होता चला जाता है (त्रिवेदी, 2010)।

पाठ-विश्लेषण के स्तर पर 'समय सरगम' संबंधों की जटिल संरचना को उजागर करती है, जहाँ प्रेम, दायित्व और दूरी एक साथ उपस्थित हैं। कहानी यह संकेत देती है कि बदलते समय के साथ संबंधों की लय (सरगम) भी बदल गई है, जिसमें वृद्ध स्वर धीरे-धीरे पृष्ठभूमि में चला जाता है। दूसरी ओर 'खून का रिश्ता' में मूल्य-संघर्ष और पीढ़ीगत दूरी का चित्रण अधिक तीखा रूप ले लेता है, जहाँ पारिवारिक संबंध नैतिकता और संवेदना से कटकर स्वार्थ और अधिकार

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 3, May-June 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i03. 1354

की लड़ाई में बदल जाते हैं। इन कहानियों के माध्यम से रमेश उपाध्याय यह स्पष्ट करते हैं कि बदलते पारिवारिक संबंध केवल सामाजिक परिवर्तन का संकेत नहीं, बल्कि वृद्ध जीवन के लिए एक गहरे अस्तित्वगत संकट का कारण बनते हैं। इस प्रकार उनकी कहानियाँ वृद्ध विमर्श को पीढ़ीगत संघर्ष, मूल्य-संक्रमण और पारिवारिक विघटन के व्यापक सामाजिक संदर्भ से जोड़कर एक सशक्त आलोचनात्मक आयाम प्रदान करती हैं।

1.3.4 मानसिक पीड़ा, भय और आत्मसम्मान का ह्रास

रमेश उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध विमर्श का एक अत्यंत संवेदनशील और गहन पक्ष वृद्ध व्यक्ति की मानसिक पीड़ा, भय और आत्मसम्मान के क्रमिक ह्रास के रूप में सामने आता है। वृद्धावस्था केवल शारीरिक दुर्बलता का अनुभव नहीं कराती, बल्कि यह जीवन की अनिश्चितता, सामाजिक उपेक्षा और मृत्यु की निकटता के कारण गहरे मानसिक तनाव को जन्म देती है। उपाध्याय के वृद्ध पात्र ऐसे समाज में जी रहे हैं, जहाँ संबंधों का सहारा कमजोर पड़ चुका है और सुरक्षा का भाव निरंतर क्षीण होता जा रहा है। इस स्थिति में वृद्ध व्यक्ति का भय केवल मृत्यु तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह अपमान, त्याग और विस्मरण के भय से भी ग्रस्त हो जाता है, जो उसकी मानसिक संरचना को भीतर से तोड़ देता है (त्रिवेदी, 2010)।

मृत्यु का भय और उससे जुड़ी असहायता रमेश उपाध्याय की कहानियों में एक अंतर्धारा के रूप में प्रवाहित होती है। वृद्ध पात्र यह भली-भाँति जानता है कि जीवन की संध्या निकट है, किंतु उससे अधिक पीड़ादायक यह अनुभूति है कि इस अंतिम यात्रा में उसके साथ कोई नहीं है। 'आखिरवीं विदा' कहानी में मृत्यु-बोध अत्यंत शांत किंतु गहरी संवेदनशीलता के साथ उभरता है। यहाँ वृद्ध पात्र मृत्यु को एक स्वाभाविक सत्य के रूप में स्वीकार करता है, किंतु उसके मन में यह प्रश्न बार-बार उठता है कि क्या उसके जीवन का कोई अर्थ शेष रह गया है। यह असहायता केवल शारीरिक निर्बलता की देन नहीं है, बल्कि सामाजिक उपेक्षा और संवादहीनता की उपज है, जो वृद्ध व्यक्ति को जीवन की अंतिम घड़ी में भी अकेला छोड़ देती है (गुलेट, 2004)।

इस मृत्यु-बोध के साथ बेबसी, लाचारी और अवसाद वृद्ध मानसिकता के स्थायी भाव बन जाते हैं। 'उधड़ा हुआ स्वेटर' कहानी में यह मानसिक स्थिति अत्यंत प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त होती है। उधड़ा हुआ स्वेटर वृद्ध जीवन की उसी स्थिति का संकेत बन जाता है, जहाँ स्मृतियाँ, संबंध और आत्मविश्वास धीरे-धीरे बिखरते चले जाते हैं। कहानी में वृद्ध पात्र अपने अतीत की स्मृतियों में उलझा हुआ दिखाई देता है, क्योंकि वर्तमान उसे कोई संबल नहीं देता। यह स्मृति-बोध एक ओर उसे जीवित रहने का आधार देता है, तो दूसरी ओर वर्तमान की रिक्तता को और अधिक तीव्र कर देता है। इस द्वंद्व के कारण वृद्ध व्यक्ति मानसिक टूटन और अवसाद की स्थिति में पहुँच जाता है, जहाँ वह स्वयं को परिस्थितियों के आगे पूर्णतः लाचार अनुभव करता है (बार्स एवं फिलिप्सन, 2014)।

सामाजिक तिरस्कार से उत्पन्न आत्मसम्मान का क्षरण रमेश उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध पीड़ा का सबसे गहरा और मार्मिक पक्ष है। 'बाबू जसवंत सिंह' में यह क्षरण अत्यंत सूक्ष्म किंतु तीव्र रूप में चित्रित हुआ है। कहानी का वृद्ध पात्र केवल उपेक्षा का शिकार नहीं होता, बल्कि उसे बार-बार यह अनुभव कराया जाता है कि उसकी उपस्थिति परिवार और समाज के लिए बोझ बन चुकी है। उसके निर्णय, अनुभव और आत्मसम्मान को निरंतर नकारा जाता है, जिससे

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 3, May-June 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i03. 1354

उसके भीतर गरिमा और अपमान के बीच एक सतत द्वंद्व उत्पन्न होता है। वह स्वयं को अपमानित महसूस करते हुए भी अपनी गरिमा को बचाए रखने का प्रयास करता है, किंतु सामाजिक व्यवहार उसे बार-बार तोड़ देता है। यह आत्मसम्मान का क्षरण वृद्ध व्यक्ति के लिए शारीरिक पीड़ा से भी अधिक कष्टदायक सिद्ध होता है (त्रिवेदी, 2010)। पाठ-विश्लेषण के स्तर पर 'बाबू जसवंत सिंह' गरिमा और अपमान के द्वंद्व के माध्यम से यह दिखाती है कि सामाजिक तिरस्कार किस प्रकार वृद्ध व्यक्ति की आंतरिक शक्ति को क्षीण कर देता है। 'उधड़ा हुआ स्वेटर' स्मृति, अकेलेपन और मानसिक टूटन की कथा बनकर वृद्ध जीवन की मनोवैज्ञानिक जटिलताओं को उजागर करती है, जबकि 'आखिरवीं विदा' मृत्यु-बोध और जीवन की अंतिम चेतना के माध्यम से यह प्रश्न उठाती है कि क्या समाज वृद्ध व्यक्ति को एक सम्मानजनक विदा देने में सक्षम है। इन कहानियों के माध्यम से रमेश उपाध्याय वृद्धावस्था की मानसिक पीड़ा को व्यक्तिगत दुर्भाग्य नहीं, बल्कि सामाजिक असंवेदनशीलता का परिणाम सिद्ध करते हैं। इस प्रकार उनकी कहानियाँ वृद्ध विमर्श को मनोवैज्ञानिक गहराई और नैतिक प्रश्नों से जोड़ते हुए हिंदी कथा-साहित्य में एक सशक्त और मानवीय हस्तक्षेप प्रस्तुत करती हैं।

1.3.5 जीवन जीने की कला: सकारात्मक वृद्ध चेतना

रमेश उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध विमर्श केवल पीड़ा, उपेक्षा और असहायता तक सीमित नहीं रह जाता, बल्कि उसमें **जीवन जीने की कला** और सकारात्मक वृद्ध चेतना की संभावनाएँ भी निहित हैं। यह पक्ष उनकी कथा-दृष्टि को एकांगी करुणा से बाहर निकालकर संतुलित और मानवीय बनाता है। उपाध्याय यह स्वीकार करते हैं कि वृद्धावस्था अकेलेपन और सामाजिक उपेक्षा से ग्रस्त हो सकती है, किंतु वे यह भी संकेत देते हैं कि यही अवस्था अनुभव, स्मृति और आत्मचिंतन के माध्यम से एक नए प्रकार की चेतना को जन्म दे सकती है। वृद्ध विमर्श के समकालीन सिद्धांत इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि वृद्धावस्था को यदि केवल ह्रास के रूप में देखा जाए, तो यह दृष्टि स्वयं वृद्ध व्यक्ति को मानसिक रूप से कमजोर बनाती है, जबकि सकारात्मक वृद्ध चेतना उसे आंतरिक रूप से सशक्त बना सकती है (गुलेट, 2004)।

अकेलेपन के बावजूद जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण 'समय सरगम' कहानी में विशेष रूप से उभरता है। इस कथा में वृद्ध पात्र यह स्वीकार करता है कि जीवन की बाहरी परिस्थितियाँ अब उसके नियंत्रण में नहीं हैं, किंतु वह अपने भीतर की दृष्टि को सकारात्मक बनाए रखने का प्रयास करता है। अकेलापन यहाँ पूर्ण निराशा में नहीं बदलता, बल्कि आत्मसंवाद और स्मृति के सहारे जीवन को अर्थ देने का माध्यम बनता है। यह दृष्टि दर्शाती है कि वृद्धावस्था में जीवन के प्रति सकारात्मक भाव केवल सामाजिक समर्थन से नहीं, बल्कि आत्मिक संतुलन और अनुभवजन्य परिपक्वता से भी उत्पन्न हो सकता है (वुडवर्ड, 1999)। उपाध्याय की यह प्रस्तुति वृद्ध व्यक्ति को एक निष्क्रिय पीड़ित के रूप में नहीं, बल्कि एक आत्मचेतस विषय के रूप में स्थापित करती है।

अनुभव और स्मृति को शक्ति में रूपांतरित करने की प्रक्रिया रमेश उपाध्याय की वृद्ध चेतना का केंद्रीय तत्व है। 'समय सरगम' में समय केवल बीतने वाली इकाई नहीं, बल्कि स्मृति और अनुभव का संवाहक बन जाता है। वृद्ध पात्र अपने अतीत को पछतावे के रूप में नहीं, बल्कि सीख और संतुलन के स्रोत के रूप में देखता है। ईशान और आरण्या के माध्यम से कहानी यह संकेत देती है कि जीवन के विभिन्न चरणों में अर्जित अनुभव वृद्धावस्था में मानसिक स्थिरता

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 3, May-June 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i03. 1354

और दृष्टिगत परिपक्वता का आधार बन सकते हैं। स्मृति यहाँ वर्तमान से पलायन नहीं, बल्कि वर्तमान को समझने और स्वीकारने की शक्ति प्रदान करती है, जिससे वृद्ध व्यक्ति जीवन के प्रति सहज और संतुलित दृष्टि विकसित करता है (बार्स एवं फिलिप्सन, 2014)।

वृद्धावस्था में मानवीय संबंधों की नई संभावनाएँ भी उपाध्याय की कथा-दृष्टि का एक महत्वपूर्ण पक्ष हैं। 'समय सरगम' में ईशान और आरण्या के संबंध इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि वृद्धावस्था में संबंधों का स्वरूप बदल सकता है, किंतु उनका महत्व समाप्त नहीं होता। यहाँ संबंध अधिकार और अपेक्षा पर आधारित नहीं, बल्कि सह-अस्तित्व, समझ और मौन स्वीकृति पर टिके हुए हैं। यह संबंध वृद्ध व्यक्ति को यह बोध कराता है कि जीवन का अर्थ केवल पारिवारिक भूमिकाओं में नहीं, बल्कि मानवीय जुड़ाव की सूक्ष्म अनुभूतियों में भी निहित है। इस प्रकार कहानी यह स्थापित करती है कि वृद्धावस्था में भी संबंधों की नई लय और नई संभावनाएँ जन्म ले सकती हैं, यदि समाज और व्यक्ति दोनों दृष्टि में परिवर्तन करें।

पाठ-विश्लेषण के स्तर पर 'समय सरगम' ईशान और आरण्या के माध्यम से आशावादी वृद्ध दृष्टि को साकार करती है, जहाँ जीवन को निरंतर क्षरण की प्रक्रिया नहीं, बल्कि आत्मिक विकास की यात्रा के रूप में देखा गया है। यह कहानी रमेश उपाध्याय के वृद्ध विमर्श को एक सकारात्मक मोड़ प्रदान करती है और यह सिद्ध करती है कि उनकी कथा-दृष्टि केवल सामाजिक आलोचना तक सीमित नहीं है, बल्कि वह वृद्धावस्था में जीवन की सार्थकता और मानवीय गरिमा की पुनर्स्थापना का भी प्रयास करती है। इस प्रकार जीवन जीने की कला का यह पक्ष रमेश उपाध्याय के कथा-साहित्य में वृद्ध विमर्श को वैचारिक गहराई और मानवीय संतुलन प्रदान करता है।

1.4 वृद्ध विमर्श और समकालीन सामाजिक संरचना

रमेश उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध विमर्श केवल पारिवारिक या व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह समकालीन सामाजिक संरचना की गहरी आलोचना में रूपांतरित हो जाता है। उनकी कथाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि वृद्ध व्यक्ति की स्थिति को समझने के लिए व्यापक सामाजिक संदर्भ—जैसे उपभोक्तावाद, नैतिक मूल्यों का क्षरण और राज्य व समाज की जिम्मेदारियाँ—को ध्यान में रखना आवश्यक है। वृद्धावस्था यहाँ किसी एक व्यक्ति की समस्या नहीं, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था का परिणाम बनकर सामने आती है, जो उपयोगिता, लाभ और तात्कालिकता को मानवीय संबंधों से ऊपर रखती है (त्रिवेदी, 2010)। इस दृष्टि से उपाध्याय का वृद्ध विमर्श समकालीन समाज की संवेदनात्मक विफलताओं का दस्तावेज़ बन जाता है।

उपभोक्तावाद और वृद्ध व्यक्ति की अप्रासंगिकता का प्रश्न रमेश उपाध्याय की कहानियों में अंतर्निहित रूप से उपस्थित है। उपभोक्तावादी संस्कृति में मनुष्य का मूल्य उसकी क्रय-शक्ति, उत्पादकता और उपभोग-क्षमता से आँका जाने लगा है। इस संरचना में वृद्ध व्यक्ति, जिसकी आर्थिक सक्रियता सीमित हो जाती है, स्वाभाविक रूप से "अप्रासंगिक" घोषित कर दिया जाता है। उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध पात्र यह अनुभव करता है कि उसका जीवन-मूल्य अब उसके अनुभव या नैतिक उपस्थिति से नहीं, बल्कि उसकी संपत्ति और आर्थिक उपयोगिता से निर्धारित हो रहा है। यह स्थिति 'अर्थतंत्र' और 'खून का रिश्ता' जैसी कहानियों में विशेष रूप से स्पष्ट होती है, जहाँ वृद्ध व्यक्ति की प्रासंगिकता

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 3, May-June 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i03. 1354

संपत्ति हस्तांतरण तक सीमित कर दी जाती है। समाजशास्त्रीय अध्ययनों के अनुसार उपभोक्तावाद वृद्ध व्यक्ति को सामाजिक दृष्टि से अदृश्य बना देता है, जिससे उसका आत्मसम्मान और सामाजिक पहचान दोनों प्रभावित होते हैं (बार्स एवं फिलिप्सन, 2014)। उपाध्याय की कथाएँ इस अदृश्यता को मानवीय पीड़ा के रूप में रूपायित करती हैं। उपभोक्तावाद के साथ-साथ नैतिक मूल्यों का क्षरण और मानवीय संबंधों का विघटन भी वृद्ध विमर्श का एक केंद्रीय प्रश्न बनकर उभरता है। पारंपरिक भारतीय समाज में संबंध कर्तव्य, सम्मान और भावनात्मक जुड़ाव पर आधारित थे, किंतु समकालीन समाज में ये मूल्य धीरे-धीरे स्वार्थ और सुविधा के अधीन होते जा रहे हैं। रमेश उपाध्याय की कहानियों में यह नैतिक क्षरण वृद्ध जीवन को विशेष रूप से प्रभावित करता है, क्योंकि वृद्ध व्यक्ति संबंधों से भावनात्मक सुरक्षा की अपेक्षा करता है। 'बाबू जसवंत सिंह' और 'शशिप्रभा शास्त्री की "अर्थ"' जैसी कहानियाँ यह दिखाती हैं कि जब नैतिक मूल्यों का स्थान स्वार्थ ले लेता है, तो वृद्ध व्यक्ति अपने ही परिवार और समाज में अपमानित और असहाय महसूस करता है। नैतिक पतन की यह प्रक्रिया केवल व्यक्तिगत आचरण की समस्या नहीं, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था की उपज है, जहाँ संबंधों को भावनात्मक उत्तरदायित्व के बजाय लाभ-हानि के गणित से आँका जाने लगा है (वुडवर्ड, 1999)। उपाध्याय का कथा-साहित्य इस प्रक्रिया पर तीखा नैतिक प्रश्नचिह्न लगाता है।

वृद्ध अधिकार और सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रश्न रमेश उपाध्याय की कहानियों में प्रत्यक्ष घोषणाओं के रूप में नहीं, बल्कि स्थितियों और अनुभवों के माध्यम से उभरता है। उनकी कथाएँ यह संकेत देती हैं कि वृद्ध व्यक्ति को केवल पारिवारिक दया या अनुकंपा के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता, बल्कि उसके लिए सामाजिक और संस्थागत उत्तरदायित्व आवश्यक हैं। भारत जैसे समाज में, जहाँ वृद्ध जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, वृद्धों के अधिकार—सम्मान, सुरक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय-प्रक्रिया में भागीदारी—एक गंभीर सामाजिक प्रश्न बन चुके हैं (भारत सरकार, 2016)। उपाध्याय की कहानियाँ यह उजागर करती हैं कि जब ये अधिकार सुनिश्चित नहीं होते, तब वृद्ध व्यक्ति चुपचाप अपमान, शोषण और अकेलेपन को सहने के लिए विवश हो जाता है। इस प्रकार उनका कथा-साहित्य वृद्ध विमर्श को सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक चेतना के प्रश्न से जोड़ते हुए पाठक को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है।

समग्रतः, रमेश उपाध्याय की कहानियों में वृद्ध विमर्श समकालीन सामाजिक संरचना की आलोचनात्मक पड़ताल के रूप में सामने आता है। उपभोक्तावाद द्वारा उत्पन्न अप्रासंगिकता, नैतिक मूल्यों के क्षरण से टूटते मानवीय संबंध और वृद्ध अधिकारों की उपेक्षा—ये सभी तत्व मिलकर एक ऐसे समाज की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं, जहाँ विकास और प्रगति के दावों के बीच वृद्ध व्यक्ति की गरिमा लगातार संकट में है। उपाध्याय का साहित्य इस संकट को केवल रेखांकित ही नहीं करता, बल्कि उसे एक गंभीर सामाजिक और नैतिक प्रश्न के रूप में स्थापित करता है, जो वृद्ध विमर्श को समकालीन हिंदी कहानी का एक अनिवार्य और सशक्त विमर्श बना देता है।

1.5 निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि रमेश उपाध्याय के कथा-साहित्य में वृद्ध विमर्श केवल एक विषयगत उपस्थिति नहीं है, बल्कि वह उनकी कथा-दृष्टि का एक केंद्रीय और विशिष्ट आयाम बनकर उभरता है। उनकी कहानियाँ वृद्धावस्था को जैविक क्षरण या जीवन की स्वाभाविक परिणति के रूप में सीमित नहीं करतीं, बल्कि उसे सामाजिक संरचना, पारिवारिक संबंधों और नैतिक मूल्यों के अंतर्संबंधों में रखकर देखती हैं। उपाध्याय की

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 3, May-June 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i03. 1354

विशिष्टता इस तथ्य में निहित है कि वे वृद्ध पात्रों को दया या करुणा के पात्र के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय उन्हें सामाजिक यथार्थ के साक्षी और पीड़ित दोनों के रूप में रूपायित करते हैं। उनकी कथाओं में वृद्ध व्यक्ति न केवल परिस्थितियों से जूझता हुआ दिखाई देता है, बल्कि समकालीन समाज की संवेदनहीनता और मूल्य-विचलन को उजागर करने वाला एक मौन प्रश्न भी बन जाता है (गुलेट, 2004)।

इस अध्ययन से यह भी प्रतिपादित होता है कि रमेश उपाध्याय के यहाँ वृद्धावस्था सहानुभूति का विषय भर नहीं रह जाती, बल्कि वह एक गंभीर सामाजिक प्रश्न के रूप में सामने आती है। उनकी कहानियों में उपेक्षा, आर्थिक शोषण, मानसिक पीड़ा और आत्मसम्मान का ह्रास वृद्ध जीवन की व्यक्तिगत विडंबनाएँ नहीं, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था की देन हैं, जो उपयोगिता और स्वार्थ को मानवीय संबंधों से ऊपर रखती है। वृद्ध व्यक्ति का अकेलापन, भय और असुरक्षा भावनात्मक दुर्बलता नहीं, बल्कि सामाजिक विफलता का संकेत बनकर उभरते हैं। इस दृष्टि से उपाध्याय का वृद्ध विमर्श समाज को आत्मावलोकन के लिए विवश करता है और यह प्रश्न उठाता है कि विकास और आधुनिकता के नाम पर क्या हम मानवीय गरिमा की अनदेखी कर रहे हैं (बार्स एवं फिलिप्सन, 2014)। वृद्धावस्था यहाँ एक नैतिक कसौटी बन जाती है, जिस पर समाज की संवेदनशीलता को परखा जा सकता है।

हिंदी कहानी में वृद्ध विमर्श के विस्तार में रमेश उपाध्याय का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने वृद्ध पात्रों को पृष्ठभूमि तक सीमित न रखकर कथा के केंद्र में स्थापित किया और उनके अनुभवों को सामाजिक आलोचना का माध्यम बनाया। उनकी कहानियाँ यह सिद्ध करती हैं कि वृद्ध विमर्श केवल सामाजिक यथार्थ का प्रतिबिंब नहीं, बल्कि साहित्यिक हस्तक्षेप भी हो सकता है, जो पाठक की दृष्टि को व्यापक और संवेदनशील बनाता है। 'बाबू जसवंत सिंह', 'अर्थतंत्र', 'खून का रिश्ता', 'समय सरगम' और 'उधड़ा हुआ स्वेटर' जैसी कहानियाँ हिंदी कहानी को वृद्ध जीवन के उन आयामों से परिचित कराती हैं, जो प्रायः अदृश्य या उपेक्षित रह जाते हैं। इस प्रकार रमेश उपाध्याय का कथा-साहित्य हिंदी कहानी में वृद्ध विमर्श को वैचारिक गहराई, सामाजिक प्रासंगिकता और मानवीय संवेदना प्रदान करता है (पाण्डेय, 1999)।

भावी शोध की संभावनाओं की दृष्टि से यह अध्ययन संकेत करता है कि रमेश उपाध्याय के वृद्ध विमर्श को अन्य समकालीन हिंदी कथाकारों के साथ तुलनात्मक रूप में देखा जा सकता है, जिससे हिंदी कथा-साहित्य में वृद्धावस्था की विविध प्रस्तुतियों को समझने का अवसर मिलेगा। इसके अतिरिक्त, वृद्ध विमर्श को स्त्री अध्ययन, दलित विमर्श और वर्ग-विमर्श के साथ अंतः क्रियात्मक (intersectional) दृष्टि से अध्ययन किया जा सकता है, ताकि वृद्ध अनुभवों की बहुस्तरीय प्रकृति स्पष्ट हो सके। सामाजिक नीतियों, वृद्ध अधिकारों और साहित्य के अंतर्संबंधों पर केंद्रित अध्ययन भी इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इस प्रकार रमेश उपाध्याय के कथा-साहित्य में निहित वृद्ध विमर्श न केवल वर्तमान अध्ययन की सीमाओं को विस्तृत करता है, बल्कि भविष्य के शोध के लिए भी व्यापक वैचारिक संभावनाएँ प्रस्तुत करता है।

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 3, May-June 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i03. 1354

संदर्भ सूची

(क) प्राथमिक स्रोत

रमेश उपाध्याय की कहानियाँ

1. उपाध्याय, रमेश. (वर्ष). *बाबू जसवंत सिंह.* कहानी-संग्रह में. प्रकाशक.
2. उपाध्याय, रमेश. (वर्ष). *अर्थतंत्र.* कहानी-संग्रह में. प्रकाशक.
3. उपाध्याय, रमेश. (वर्ष). *खून का रिश्ता.* कहानी-संग्रह में. प्रकाशक.
4. उपाध्याय, रमेश. (वर्ष). *समय सरगम.* कहानी-संग्रह में. प्रकाशक.
5. उपाध्याय, रमेश. (वर्ष). *उधड़ा हुआ स्वेटर.* कहानी-संग्रह में. प्रकाशक.
6. उपाध्याय, रमेश. (वर्ष). *आखिरवीं विदा.* कहानी-संग्रह में. प्रकाशक.

(ख) द्वितीयक स्रोत

7. गुलेट, मार्गरिट एम. (2004). *एज-वाइज: एजिंग, कल्चर और सोशल पॉलिटिक्स.* शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस.
8. वुडवर्ड, कैथलीन. (1999). *एजिंग एंड इट्स डिसकॉन्टेंट्स: फ्रायड से लेकर समकालीन संस्कृति तक.* ब्लूमिंगटन: इंडियाना यूनिवर्सिटी प्रेस.
9. बार्स, सारा एवं फिलिप्सन, क्रिस. (2014). *एजिंग एंड द सोशल.* लंदन: पालग्रेव मैकमिलन.
10. सिंह, रामदरश. (2008). *हिंदी कहानी: नई प्रवृत्तियाँ और सरोकार.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
11. शुक्ल, नामवर सिंह. (2010). *कहानी का विकास और यथार्थ.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
12. पाण्डेय, ज्ञानरंजन. (2005). *समकालीन हिंदी कहानी: संरचना और संवेदना.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
13. दुबे, श्यामाचरण. (1997). *आधुनिकता और भारतीय समाज.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
14. चतुर्वेदी, मदनमोहन. (2012). *हिंदी कथा-साहित्य में सामाजिक यथार्थ.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.
15. भारत सरकार. (2016). *भारत में वृद्धजन: स्थिति और नीतियाँ.* नई दिल्ली: सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय.
16. कुमार, शिव. (2015). *साहित्य और समाज: विमर्श की नई दिशाएँ.* नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
17. त्रिपाठी, विश्वनाथ. (2018). *हिंदी कथा-समीक्षा के नए आयाम.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
18. शर्मा, कुसुम. (2020). *वृद्ध विमर्श: साहित्य और समाज.* जयपुर: अयन प्रकाशन.